महामृत्युंजय मंत्र

(शुक्ल यजुर्वेद ३।६०)

ॐ हौं जूं सः । ॐ भूर्भुवः स्वः ।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

स्वः भुवः भूः ॐ। सः ॐ हौं ॐ ।

दिव्य गन्ध से युक्त, मृत्युरहित, धन-धान्यवर्धक, त्रिनेत्र रुद्र की हम पूजा करते हैं। वे रुद्र हमें अपमृत्यु और संसाररूप मृत्यु से मुक्त करें। जिस प्रकार ककड़ी का फल अत्यधिक पक जानेपर अपने वृन्त (डंठल)-से मुक्त हो जाता है, उसी प्रकार हम भी मृत्युसे छूट जायें; किंतु अभ्युदय और निःश्रेयसरूप अमृतसे हमारा सम्बन्ध न छूटने पाये।